History Class 12 Important Question Chapter 4 विचारक, विश्वास और ईमारतें

प्रश्न 1 :त्रिपिटक क्या हैं ?

उत्तर : बौद्ध धर्म में बुद्ध के उपदेशों एवं बौद्ध धर्म से संबंधित ज्ञान के पिटारा को त्रिपिटक कहते हैं | यह तीन हैं –

विनय पिटक – बौद्ध संघ के नियम

सुत्त पिटक – बुद्ध के जीवन का वर्णन

अभिधम्म पिटक – दार्शनिक सिद्धांत एवं शिक्षाओं का वर्णन

प्रश्न 2 : बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्गो के नाम लिखें ?

उत्तर : गौतम बुद्ध ने लोगों को सांसारिक दुखों से मुक्ति के लिए निम्न अष्टांगिक मार्ग बताएं-

सम्यक दृष्टि- चार आर्य सत्य में विश्वास करना |
सम्यक संकल्प- मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना
सम्यक वचन – हानिकारक बातें और झूठ ना बोलना |
सम्यक कर्मात -बुरे कर्म ना करना |
सम्यक आजीविका – कोई भी हानिकारक व्यापार ना करना |
सम्यक व्यायाम – अपने आप को स्वस्थ रखने का प्रयास करना |
सम्यक् स्मृति – स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना |
सम्यक समाधि – निर्वाण पाना |

प्रश्न 3 : बुद्ध के चार आर्य सत्यों का उल्लेख करें |

उत्तर : महात्मा बुद्ध ने चार आर्य सत्यों पर बल दिया | ये निम्नलिखित हैं –

दुःख –संसार में दुःख हैं |
समुदाय –दुःख का कारण हैं |
निरोध –दुःख निवारण संभव हैं |
मार्ग –दुःख निवारण हेतु अष्टांगिक मार्ग का पालन करना |

प्रश्न 4 : महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं क्या थी ?

उत्तर : महात्मा बुध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे | इनकी मुख्य शिक्षाएं निम्न थी :

चार आर्य सत्य है – दुःख ,समुदाय ,निरोघ ,मार्ग
अष्टांगिक मार्ग
मनुष्य को मध्यम मार्गी होना चाहिए

https://www.evidyarthi.in/

जातिवाद , यज्ञ परंपरा आदि में अविश्वास रखना चाहिए |

प्रश्न 5 : महावीर के उपदेशों का वर्णन करें |

उत्तर : महावीर जैन की शिक्षाएं बड़ी सरल तथा सादा है | यह कर्म , उच्च्य आदर्शों तथा आवागमन के सिद्धांतों पर आधारित है | इनमें अहिंसा , तपस्या , त्रिरत्न पर विशेष बल दिया है | संक्षेप में इनके मुख्य सिद्धांत इस प्रकार है-

त्रिरत्न – जैन धर्म में 3 रत्नों के पालन पर जोर दिया गया है -1. सम्यक विश्वास 2. सम्यक ज्ञान 3. सम्यक आचरण
पांच महाव्रत – महावीर स्वामी ने गृहस्थों के जीवन को पवित्र बनाने के लिए पांच महाव्रत बताए हैं -1. सत्य 2. अहिंसा 3. असत्येय 4. अपरिग्रह 5. ब्रह्मचर्य
24 तीर्थंकरों की पूजा
मोक्ष प्राप्ति तथा निर्वाण -हिंदू एवं बौद्ध धर्म की भांति जैन धर्म में भी मोक्ष प्राप्ति अथवा निर्वाण को जीवन का चरम लक्ष्य माना जाता है |

प्रश्न 6 : बौद्ध संगीतियां क्यों बुलाई गई ? चतुर्थ बौद्ध संगीति का क्या महत्व है ?

उत्तर : महात्मा बुद्ध की मृत्यु के पश्चात बौद्ध धर्म के अनुयायियों में मतभेद एवं आंतरिक संघर्ष शुरू हो गया था | इस संघर्ष को समाप्त करने के लिए समय-समय पर बौद्ध समितियों अथवा सभाओं का आयोजन किया गया | इस प्रकार चार संगीतियां अथवा सभाएं बुलाई गई थी | इसमें चतुर्थ बौद्ध संगीति जिसका आयोजन कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के कुंडलवन विहार में बुलाया गया था , सर्वाधिक महत्वपूर्ण है | इस संगीति के सभापति महान बौद्ध विद्वान अश्वधोष थे | इस संगीति के अवसर पर बौद्ध धर्म दो संप्रदाय हीनयान और महायान में विभाजित हो गया | इस संगीति के अवसर पर त्रिपिटक पर भाष्य से लिखे गए |

प्रश्न 7 : सांची के स्तूप पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें |

उत्तर : सांची का स्तूप विश्व के प्रमुख सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है | यह स्तूप मध्य प्रदेश के ऐतिहासिक नगरी विदिशा के समीप सांची की पहाड़ी पर स्थित है | यह स्तूप आज भी अच्छी हालत में है , जबकि अन्य करीब करीब नष्ट हो गए हैं | इस महान स्तूप का निर्माण सम्राट अशोक ने कराया था | महा स्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेष , द्वितीय स्तूप में अशोक कालीन धर्म प्रचारकों के एवं तृतीय स्तूप में बुद्ध के दो शिष्यों के अवशेष रखे हुए हैं |

प्रश्न 6 : निर्वाण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : बौद्ध धर्म में निर्वाण शब्द का अर्थ है – मुक्ति पाना , मोक्ष का जीवन मरण के बंधनों से छुटकारा पाना | बौद्ध धर्म में मोक्ष का निर्वाण प्राप्त करना जीवन का मुख्य उद्देश्य माना जाता है |

प्रश्न 7 : त्रिरत्न से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : महावीर जैन के अनुसार संचित कर्मों से छुटकारा पाने के लिए तथा नए कर्मों को संचित होने से रोकने के लिए मनुष्य को निम्नलिखित तीन रत्नों का पालन करना चाहिए -1. सम्यक विश्वास 2. सम्यक ज्ञान 3. सम्यक आचरण

प्रश्न 8 : बौद्ध धर्म के महायान और हीनयान के सिद्धांतों में क्या अंतर है ?

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर : हीनयान संप्रदाय महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है, यह संप्रदाय महात्मा बुद्ध को एक महापुरुष के रूप में स्वीकार करता है | हीनयान में ज्ञान को प्रमुख स्थान दिया गया है तथा व्यक्ति को निर्वाण की प्राप्ति करना उद्देश बताया गया है |

महायान संप्रदाय में महात्मा बुद्ध के अतिरिक्त बोधिसत्वों की शिक्षाओं को शामिल किया गया तथा महात्मा बुद्ध को एक सर्वशक्तिमान देवता माना गया है | महायान संप्रदाय के अनुयायी बोधिसत्व को आदर्श मानते हुए गृहस्थ जीवन को अधिक महत्त्व दिया है |

प्रश्न 9 : श्वेतांबर तथा दिगंबर में क्या अंतर है ?

उत्तर : श्वेतांबर तथा दिगंबर जैन धर्म के 2 संप्रदाय हैं | श्वेतांबर श्वेत वस्त्र पहनते हैं जबकि दिगंबर वस्त्र नहीं पहनते हैं अर्थात नग्न रहते हैं |

प्रश्न 10 : स्तूप , चैत्य, विहार से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : स्तूप – महात्मा बुद्ध की अस्थियों पर अर्ध गोलाकार रूप में बने भवनों को स्तूप के नाम से जाना जाता है | चैत्य – बौद्ध मंदिरों को चैत्य के नाम से जाना जाता था | विहार -बौद्ध मठों को विहार कहा जाता था |

https://www.evidyarthi.in/